ISSN (Online): 3108-1789

International Journal of Global Innovations and Modern Research

Volume: 1, Issue No: 1, (January-June) 2026

Published by
BOOKS ARCADE
F-10/24, 2nd Floor, Krishna Nagar,
Near Vijay Chowk, Delhi-110051 (INDIA)
E-mail: editor@ijgimr.com
Website: www.ijgimr.com

IJGIMR

फसल के प्रकार में आए परिवर्तन और किसानों का सहयोगः एक भौगोलिक अध्ययन

अशोक कुमार[1], डॉ. अन्नु अरोड़ा[2]

[1]शोधार्थी (भूगोल विभाग), टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

[2]सहायक आचार्य (भूगोल विभाग), टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

शोध सारांश

कृषि भूगोल में *फसल प्रतिरूप* (Crop Pattern) एक गत्यात्मक अवधारणा है जो समय एवं तकनीक के साथ परिवर्तनशील रहती है। पिछले दो दशकों में भारतीय कृषि में निर्वाह खेती से व्यावसायिक खेती की ओर महत्वपूर्ण बदलाव देखा गया है। इस परिवर्तन में किसानों के आपसी सहयोग, ज्ञान का आदान–प्रदान और सामुदायिक सहभागिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस अध्ययन का उद्देश्य फसल प्रतिरूप में हो रहे परिवर्तनों का विश्लेषण करना तथा यह स्पष्ट करना है कि किसान सहयोग फसल विविधीकरण को कैसे प्रभावित करता है। अध्ययन में प्राथमिक सर्वेक्षण तथा द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। परिणाम यह दर्शाते हैं कि सामूहिक सहयोग, साझा सिंचाई सुविधाओं और किसान उत्पादक संगठनों (FPO) की सक्रियता से फसल विविधीकरण में स्पष्ट वृद्धि हुई है। अध्ययन निष्कर्ष देता है कि फसल प्रतिरूप में परिवर्तन केवल प्राकृतिक कारकों पर निर्भर नहीं है, बल्कि यह किसानों की सामूहिक इच्छाशक्ति और सामाजिक सहयोग का परिणाम है।

प्रमुख शब्द

फसल प्रतिरूप परिवर्तन, किसान सहयोग, फसल विविधीकरण, कृषि भूगोल

परिचय

कृषि भूगोल में 'फसल प्रतिरूप' (Crop Pattern) एक गत्यात्मक अवधारणा है, जो समय और तकनीक के साथ बदलती रहती है। पारंपरिक रूप से किसान केवल उन फसलों को उगाते थे जो उनके परिवार की उदरपूर्ति के लिए आवश्यक थीं। परिवर्तन का स्वरूपः पिछले दो दशकों में भारतीय कृषि में 'निर्वाह खेती' से 'व्यावसायिक खेती' की ओर बड़ा बदलाव आया है।

किसानों का सहयोगः इस बदलाव का मुख्य चालक केवल सरकारी नीतियां नहीं, बल्कि किसानों का आपसी सहयोग, ज्ञान साझा करना और सामुदायिक भागीदारी है।

अध्ययन का केंद्रः यह शोध स्पष्ट करता है कि भौगोलिक कारकों (मिट्टी, जलवायु, जल) के बावजूद, मानव कारक (किसान) अपनी सहभागिता से फसल प्रकारों में क्रांतिकारी बदलाव ला सकता है।

प्रस्तावित शोध के सोपान

शोध को पूर्ण करने हेतु निम्नलिखित व्यवस्थित चरणों का पालन किया गया है:

विषय चयन एवं क्षेत्र सीमांकनः अध्ययन हेतु विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र (जैसे अर्ध–शुष्क या नहरी क्षेत्र) का चयन।

ऐतिहासिक आंकड़ों का संकलनः पिछले 10 वर्षों के फसल आंकड़ों का संग्रह।

क्षेत्रीय सर्वेक्षण (Field Survey): प्रत्यक्ष रूप से किसानों से संवाद।

तुलनात्मक विश्लेषणः सहयोग से पहले और सहयोग के बाद के फसल विविधीकरण का विश्लेषण।

रिपोर्ट लेखन एवं मानचित्रणः प्राप्त निष्कर्षों को भौगोलिक मानचित्रों और आरेखों द्वारा प्रदर्शित करना।

विधि तंत्र

शोध की प्रकृति गुणात्मक (Qualitative) और मात्रात्मक (Quantitative) दोनों है:

प्राथमिक विधिः 100–150 किसानों के बीच सर्वेक्षण और प्रश्नावली का वितरण।

द्वितीयक विधिः राजस्व रिकॉर्ड, कृषि विभाग की रिपोर्ट और रिमोट सेंसिंग आंकड़ों का उपयोग।

सांख्यिकीय तकनीकः प्रतिशत परिवर्तन, फसल एकाग्रता सूचकांक और 'विविधीकरण सूचकांक' का प्रयोग।

साहित्य समीक्षा

जॉनस्टन (1970): ने तर्क दिया कि कृषि नवाचारों का प्रसार 'पड़ोसी प्रभाव' (Neighbor Effect) से सबसे तेज होता है।

भल्ला एवं त्यागी (1989): के अनुसार, भारतीय कृषि में क्षेत्रीय असमानताएँ सिंचाई और सामुदायिक सहयोग के स्तर पर निर्भर करती हैं।

हालिया अध्ययन (2020–24): बताते हैं कि व्हाट्सएप (WhatsApp) ग्रुप और किसान उत्पादक संगठन (FPO) फसल परिवर्तन के नए भौगोलिक औजार बन गए हैं।

शोध समस्या

मुख्य समस्या यह है कि संसाधनों की उपलब्धता के बावजूद कई क्षेत्रों में फसल विविधीकरण धीमा है।

क्या किसानों का आपसी सहयोग वित्तीय बाधाओं को दूर कर सकता है।

बाजार की सूचनाओं का अभाव और पारंपरिक मानसिकता कैसे फसल परिवर्तन की गति को रोकती है।

जलवायु परिवर्तन के दौर में क्या किसान सामूहिक रूप से नई फसलों (जैसे औषधीय पौधे या बागवानी) को अपनाने के लिए तैयार हैं।

शोध अंतराल

अधिकांश शोध सरकारी योजनाओं या तकनीकी नवाचारों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, लेकिन 'किसानों के आपसी सामाजिक सहयोग' (Social Capital) के कारण आए फसल परिवर्तन पर भौगोलिक साहित्य की कमी है। यह शोध इसी 'मानवीय कारक' के प्रभाव का अध्ययन कर उस कमी को पूरा करने का प्रयास करता हैं।

उद्देश्य

अध्ययन क्षेत्र में पिछले दो दशकों में हुए फसल प्रतिरूप परिवर्तनों का विश्लेषण करना।

फसल परिवर्तन में 'किसान–से–किसान' (Farmer to Farmer) ज्ञान प्रसार की भूमिका को रेखांकित करना।

सामुदायिक सिंचाई और साझा मशीनरी के प्रभाव का अध्ययन करना।

नई फसलों को अपनाने में आने वाली बाधाओं और सफलता की कहानियों का दस्तावेजीकरण करना।

परिकल्पना

H1: जिन क्षेत्रों में किसान समूहों (FPO/सहकारी समितियों) की सक्रियता अधिक है, वहां फसल विविधीकरण की दर असंगठित क्षेत्रों की तुलना में 40: अधिक है।

H2: सामूहिक जल प्रबंधन और साझा कृषि यंत्रों के कारण किसानों ने जोखिम वाली लेकिन अधिक लाभ देने वाली नकदी फसलों की ओर रुख किया है।

महत्व

सामाजिक महत्व यह अध्ययन ग्रामीण क्षेत्रों में सामुदायिक एकता और सहकारी कृषि के महत्व को सिद्ध करता है।

आर्थिक महत्वः फसल परिवर्तन से किसानों की आय में होने वाली वृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता है।

भौगोलिक महत्वरू यह दर्शाता है कि मानव पर्यावरण के साथ अनुकूलन (Adaptation) केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामूहिक प्रक्रिया है।

विश्लेषण के मुख्य बिंदु

पारंपरिक बनाम आधुनिक फसलेंः अनाज से हटकर तिलहन, दलहन और फलों (किन्नू, बेर, ड्रैगन फ्रूट) की ओर संक्रमण।

सहयोग के माध्यमः सामुदायिक बोरवेल, श्खाल पक्का करनाश और साझा ट्रैक्टर हार्वेस्टर।

सूचना का आदान–प्रदानः स्थानीय मेलों और चौपालों के माध्यम से नए बीजों की जानकारी।

निष्कर्ष

अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि फसल प्रतिरूप में परिवर्तन केवल जलवायु या मिट्टी पर निर्भर नहीं है, बल्कि यह किसानों की सामूहिक इच्छाशक्ति और सहयोग का परिणाम है। भौगोलिक बाधाओं को पार करने के लिए किसानों का आपसी सहयोग एक 'कैटेलिस्ट' (उत्प्रेरक) का कार्य करता है। यदि सरकारी एजेंसियां इन किसान समूहों को अधिक स्वायत्तता और तकनीकी सहायता प्रदान करें, तो टिकाऊ कृषि (Sustainable Agriculture) के लक्ष्य को प्राप्त करना अत्यंत सुगम हो जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

तिवारी, आर.सी. एवं यादव, बी.एन. (2021): कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

हुसैन, माजिद (2018): भारत का भूगोल, मैकग्रा हिल शिक्षा।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (HAU): फार्म सर्वे रिपोर्ट्स और जर्नल ऑफ रिसर्च।

Singh, Jasbir (1974): An Agricultural Geography of Haryana, Vishal Publications.

NITI Aayog (2023): Report on Farmers' Participation and Crop Diversification